संशोधक

UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

● वर्ष : ९० ● मार्च २०२२ ● पुरवणी हिंदी विशेषांक ०३

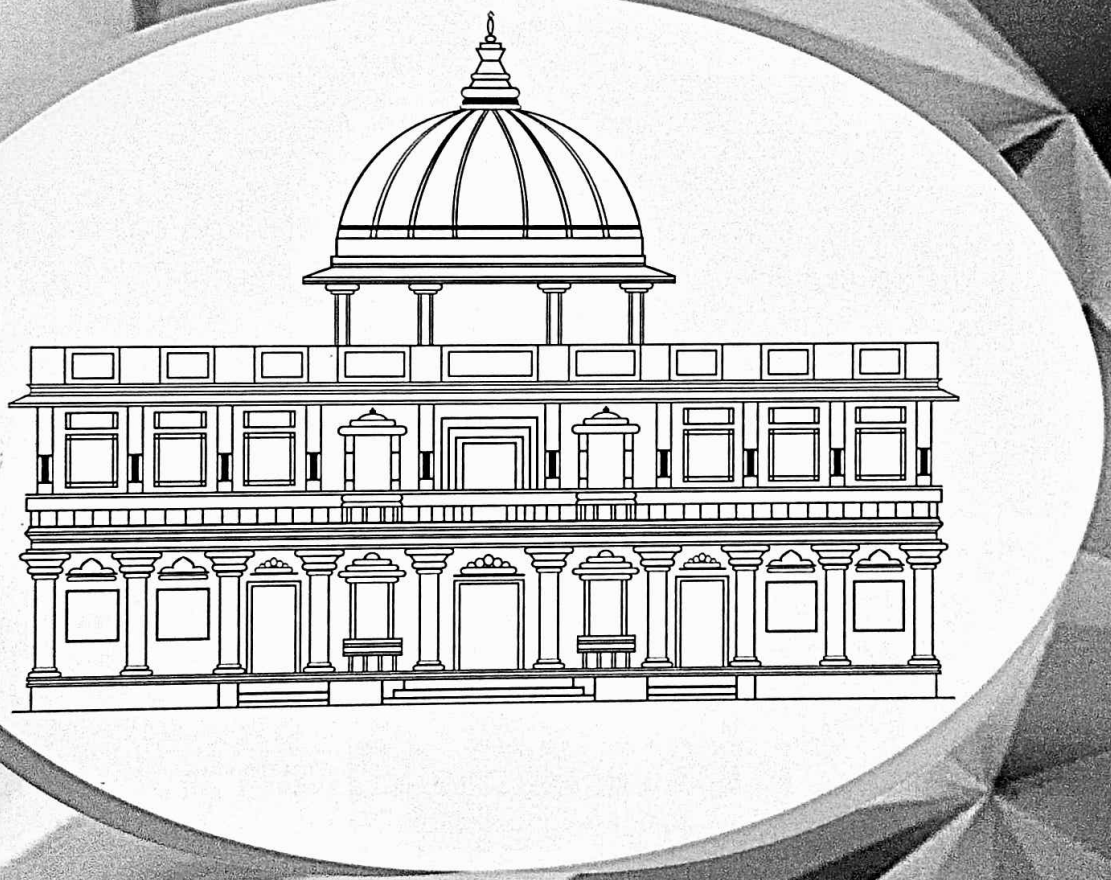

इतिहासाचार्य वि. का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

पृ. क्रमांक

अ.नं. लेख एवं लेखकों के नाम

२८. डॉ.शशिप्रभा शास्त्री जी का उपन्यास हर दिन इतिहास एवं सांस्कृतिक परिदृश्य/डॉ.महेंद्रकुमार वाढे,प्रा.राजेंद्र ब्राह्मणे १०५
२९. साहित्य, समाज और सिनेमा की त्रयी में कमलेश्वर की सामाजिक फिल्में/प्रा.डॉ.जयंत ज्ञानोबा बोबडे १०९
३०. जंगल जहाँ शुरू होता है उपन्यास – थारू आदिवासी समाज की वास्तविक गाथा /डॉ.भारती वळवी ११५
३१. भारतीय संस्कृति में 'रामचरितमानस' की प्रासंगिकता/डॉ. कांबळे आशा दत्तात्रय ११८
३२. साहित्य में समाज का प्रतिबिंब/ प्रा.डॉ.वनिता पवार–निकम १२२
३३. हिंदी उपन्यासों में किन्नरों के रीति–रिवाज एवं त्योहार/ डॉ. सविता पुंडलिक चौधरी १२६
३४. साहित्य समाज और संस्कृति/ डॉ.अनिता वेताळ १३०
३५. वीरेन्द्र जैन के उपन्यासों में चित्रित योजना–परियोजना में पिसता किसान/डॉ.के.डी.बागुल १३३
३६. प्रेमचंद की कहानियों में समाज जीवन का चित्रण/ डॉ.रोहिदास गवारे १३६
३७. संत रैदास के काव्य में सामाजिकता/ डॉ.संतोष रायबोले १४१
३८. रामकुमार वर्मा कृत नाटक 'महाराणा प्रताप ': समाज और संस्कृति का सुंदर समन्वय/डॉ.प्रीति सोनी १४५
३९. डॉ.राजेंद्र मिश्र के उपन्यास साहित्य में समसामायिक बोध ('ठहरा हुआ पल' एवं 'अपनी परिधि में' के विशेष संदर्भ में) प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील, प्रा. एम. जी. ठाकरे १५०
४०. सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के साहित्य में अभिव्यक्त समाज एवं संस्कृति/प्रा.डॉ.मनोहर पाटील १५४
४१. समाज और संस्कृति से साहित्य का संबंध/डॉ.दिपक पवार १५८
४२. साहित्य का समाज और संस्कृति में योगदान/ डॉ.शेख शहेनाज अहेमद १६१
४३. रामचरितमानस एक अध्ययन/डॉ.भगवान भालेराव १६४
४४. डॉ.कैलाशचंद्र शर्मा के नाटकों में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की महत्ता/ डॉ.निंबा लोटन वाल्हे १६८
४५. पंकज सुबीर की कहानियों में सामाजिक चेतना/ डिन्सी जॉर्ज १७१
४६. राजेश जोशी के काव्य में सामाजिकता / प्रा. दिलीप पाटील १७६
४७. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल के व्यंग्य साहित्य में सामाजिक चेतना/प्रा.डॉ. अभयकुमार खैरनार, प्रा.राजेश खर्डे १७९
४८. डॉ. राजेंद्र मिश्र के उपन्यास 'ठहरा हुआ पल' में सामाजिक तथा सांस्कृतिक चित्रण /प्रा.डॉ.अभयकुमार खैरनार,परमेश्वर बाविस्कर १८२
४९. 'ढलते सूरज की तडप' (सुधा अरोडा की कहानी 'उधडा हुआ स्वेटर' के विशेष संदर्भ में) /प्रा.योगेश पाटील,प्रा.भारती सोनवणे १८६
५०. वर्तमान बालकों का भविष्य – बालसाहित्य एवं समाज / प्रा. अमृता पाटील १९०
५१. जैनेंद्र कुमार और रंगनाथ पठारेजी के साहित्य में सामाजिक मनोविज्ञान / प्रा.डॉ.जयश्री गावीत, प्रा. वंदना जाधव १९३
५२. सुधा अरोडा के साहित्य में समाज और संस्कृति का दर्शन / प्रा.डॉ.प्रमोद पाटील, श्री.राजेंद्र मोरे १९८
५३. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में धीरेन्द्र अस्थाना के उपन्यासों में प्रतिबिंबित महानगरीय समाज/प्रा.डॉ.महेंद्रकुमार वाढे,शरद शेलार..... २०१

''साहित्य का समाज और संस्कृति में योगदान''

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
हिंदी विभाग प्रमुख
हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय हि.नगर
मो. ९४०४६३९७८५

संस्कृति और साहित्य समाज की उपज है। साहित्य समाज की संपूर्ण व्याख्या करने में सक्षम है। लेखन एक कर्म है और कोई भी लेखक विमुख होकर अथवा समाज को पूर्णत: आत्मसात किए बिना रचना कर्म नही कर सकता । समाज सामाजिक संबंधों का जाल है और वह सामाजिक, अंत क्रियाओं से बनता है। साहित्य समाज और संस्कृति का मूल मनुष्य है और इसका विषय भी मनुष्य है।

साहित्य और संस्कृति समाज का प्रतिबिंब होती है। इनमें अटूट संबंध होता है। स्पष्ट है कि दोनों का गहरा संबंध है औरर आज तो साहित्य समाज का एक अंग बन चुका है, जिसमें समाज की तमाम सांस्कृतिक सामाजिक तथा अन्य गतिविधियों का सही चित्रण है। जो समाज को एक नयी दिशा देता है। साहित्यकार ने अपना जीवन जिस समाज के परिवेश में बिताया है उसका ही अनुभव साहित्य में झकलता है।

संस्कृति एंव समाज उत्थान में साहित्य का योगदान महत्वपूर्ण है। साहित्य नव निर्माण्ण तथा पूननिर्माण दोनों करता है। नियामक और निर्णायक दोनों भूमिकाओं में यह जीता है। इसमें मनोभावों का प्राधान्य होने से इसका वास्तविक स्वरूप वैश्विक हो जाता है। यह सही है, साहित्य आदेशात्मक या दण्डात्मक भूमिका तो नही निर्वाहित करता, परंतु इसकी प्रभावात्मक क्षमता प्रच्छन्न एवं परोक्ष रूप से सर्वाधिक प्रबल होती है। मानव मन को इस तरह प्रभावित करता है कि वह तत्काल उस अनुरूप जीवन ढ़ालने को कटिबध्द हो जाता है। साहित्य की प्रकृति वास्तव में उस शमी वृक्ष की भांति होती है, जो बाहर तो शीतल होती, परंतु भीतर अग्नेय क्रांति का बड़नावल छिपाये होती है। इसकी प्रेरणा क्षणिक या सीमित होकर सार्वभौम और सार्वकालिक होती है। संस्कृति का संबंध शिक्षा, कला धर्म और साहित्य से है। आ.रामचंद्र शुक्ल लिखा है-''जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक साम्प्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।'' रचनाओं में समकालीन जीवन व संस्कृति में समकालीन जीवन संस्कृति की झाँकी विशदता से प्रतिबिंबित होना स्वाभाविक है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में रीति काव्य के महत्व को अधोरेखित करते हुए डॉ.नगेंद्र ने लिखा है, ''ब्रजभाषा के कलाप्रसाधनों के सम्यक परिष्कार-प्रसाधन द्वारा रीति कवियों ने हिंदी काव्य की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एकांत वैशिष्ट्य की दृष्टि से भारतीय में ही नहीं, संपूर्ण विश्व के वाङ्मय में आलोचना और सर्जना के संयोग से निर्मित यह काव्य-विद्या अपना उदाहरण आप ही है: किसी भी भाषा में इस प्रकार का काव्य इतने प्रचुर परिमाण में रचा गया।''[२]

साहित्य में ही समाज निर्माण की शक्ति होती है। कोई विचार शब्द में बंधकर भी स्थाई होता है। पीढ़ियों तक पहुँचाता है। साहित्य समाज का दर्पण है, समाज का प्रतिबिंब है, समाज का मार्गदर्शक है तथा समाज का लेखा-जोखा है। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता की जानकारी उसके साहित्य से प्राप्त होती है। साहित्य लोकजीवन का अभिन्न अंग है। किसी भी काल के साहित्य से उस समय की परिस्थितियों, जनमानस के रहन-सहन, खान-पान अन्य गतिविधियों का पता चलता है। समाज साहित्य के प्रभावित करता है और साहित्य समाज पर प्रभाव डालता है। साहित्य समाज से वही संबंध है, जो संबंध आत्मा का शरीर से होता है

साहित्य समाज रुपी शरीर की आत्मा है। साहित्य अजर अमर है। महान विद्वान योननागोची के अनुसार ''समाज नष्ट हो सकता है, राष्ट्र भी नष्ट हो सकता है, किन्तु साहित्य का नाश कभी नहीं हो सकता।''

साहित्य संस्कृत के 'सहित' शब्द से बना है। संस्कृत के विद्वानों के अनुसार साहित्य का अर्थ है-''हितेन सह सहित तस्य भावः'' अर्थात कल्याणकारी भाव। कहा जा सकता है कि साहित्य लोककल्याण के लिए सृजित किया जाता है। साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन करना मात्र नही है। अपितु इसका उद्देश्य समाज का मार्गदर्शन करना भी है।

प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता अति समृध्द थी। हमारी सभ्यता इतनी उन्नत थी कि हम आज भी उस पर गर्व करते है। किसी भाषा के वाचिक और लिखित सामग्री को साहित्य कह सकते है। विश्व में प्राचीन वाचिक साहित्य आदिवासी भाषाओं में प्राप्त होता है। भारतीय संस्कृत साहित्य ऋग्वेद से प्रारंभ होता है। व्यास, वाल्मीकि जैसे पौराणिक ऋषियों ने महाभारत एवं रामायण जैसे महाकाव्यों की रचना की। भास कालिदास एवं अन्य कवियों ने संस्कृत में नाटक लिखे, साहित्य की अमूल्य धरोहर है। भक्त साहित्य में अवधी में गोस्वामी तुलसीदास, बृज भाष में सूरदास, मारवाड़ी में मीरा बाई, खड़ी बोली में कबीर, रसखान, मैथिली में विद्यापति आदि प्रमुख है। ''रामभक्ति विषयक रचनाओं में यद्यपि तुलसीदास कृत 'रामचरित् मानस' जैसा व्यक्तिपूर्ण काव्य ग्रंथ अन्यत्र उपलब्ध नही है किंतु फिर भी तुलसी की लोक कल्याणकारी समन्वयात्मक संस्कृति एवं सामाजिक जीवन दृष्टि इन कवियों को पूर्वकार में प्राप्त हुई थी।''[३]

मानव की विचार धारा में परिवर्तन लाने का कार्य साहित्य द्वारा किया जाता है। इतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्र या समाज में आज तक जितने भी परिवर्तन आए, वे सब साहित्य के माध्यम से ही आए। साहित्यकार समाजमें फैली कुरतियों, विसंगतियों, विकृतियों, अभावों, विषमताओं, असमानताओं आदि के बारे में सोचता है, इनके प्रति जनमानस को जागरुक करने का कार्य करता है। साहित्य जनहित के लिए होता है। जब सामाजिक जीवन में जीवन मूल्यों का पतन होने लगता है, तो साहित्य जनमानस का मार्गदर्शन करता है। ''भक्ति कालीन रचनाओं में समाज व्यवस्था का रूप प्रकाश में आते है जिनमें एक तो वह है जो संत कवियों को अभिप्रेत था। दूसरा समाज का यथा-तथ्य चित्रण करना, जो समकालीन जीवन को प्रकाशित करने में सत्यम है। समाज के यथार्थ चित्रांकन की कई विशेषताएँ इन काव्यों में प्रतिबिंबित है।''[४]

जीवन में मानव के साथ क्या घटित होता है, उसे साहित्यकार शब्दों में रचकर साहित्य की रचना करता है, अर्थात साहित्यकार जो देखता है, अनुभव करता है, चिंतन करना है, विश्लेषण करता है, उसे लिख देता है। साहित्य सृजना के लिए विषयवस्तु समाज के ही विभिन्न पक्षों से उठाई जाती है। साहित्यकार साहित्य की रचना करते समय अपने विचारों और कल्पना को भी सम्मिलित करता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, ''साहित्य सामाजिक मंगल का विद्यालय है यह सत्य यहै कि व्यक्ति की प्रतिभा से सही साहित्य रचित होता है किंतु और भी अधिक सत्य यह है कि प्रतिभा सामाजिक प्रगति की उपज है।''[५]

साहित्यकार को समाज का छायाचित्रकार या चित्रकार भी कहा जाता है क्योंकि साहित्यकार अपनी कृति को समाज में चल रही मान्यताओं और परंपराओ के वर्णन द्वारा ही सजाता है इसलिए साहित्य और समाज में अन्यायोश्रित संबंध प्रत्येक देश के साहित्य में देखने को मिलता है। कबीर ने अपने समय आडंबरों, सामाजिक करीतियों और मान्यताओं के विरूध्द अपनी आवाज उठाई। ठीक इसी तरह प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासो में किसी न किसी समस्या के प्रति संवेदना जताई है। कोई भी साहित्यकार चाहे कितना भी अपने को समाज से अलग रखना चाहे लेकिन वह ऐसा नही कर पाता है।

कवी वाल्मीकि की पवित्र वाणी आज भी हमारे हृदय 'रूस्थल में मंजु मंदाकिनी प्रवाहित कर देती है। गोस्वामी तुलसीदास जी का अमर काव्य आज अज्ञानान्धकार में भटकते हुए असंख्य भारतीयों का आकाशदीप की भाँति पथ प्रदर्शन कर रहा है। कालिदास का अमर काव्य भी आज के शासकों के समक्ष रघुवंशियों के लोकप्रिय शासन का आदर्श उपस्थित करता है। आज भारतवर्ष युगों-युगों से अचल हिमाचल की भाँति अड़िग खड़ा है, जबकि प्रभंजन और झंझावत आए और चले गए। यहि आज हमारे पास चिर समृद्ध साहित्य ना होता तो ना जाने हम कहाँ होते और भी या नही कुछ कहा नही जा सकता था। ''उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी तो भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक समाज निर्माण की शताब्दी कही जा सकती है। इस शताब्दी ने स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज सुधार

को भी संघर्ष का विषय बनाया। इस काल के साहित्य ने समाज जागरण के लिए कभी अपनी पुरातन संस्कृति को निष्ठा के साथ स्मरण किया है, तो कभी तात्कालिक स्थितीयों पर चिंता भी गहराई के साथ व्यक्त की है।''[६]

साहित्य सामाज से भाव सामग्री और प्रेरणा ग्रहण करता है तो वह समाज को दिशा बोध देकर अपने दायित्व का भी पूर्णत: अनुभव होता है। परमुखोपेक्षीता से बचाकर उनमें आत्मबल का संचार करता है। साहित्य का पांचजन्य उदासीनता का राग नही सुनता, वह तो कायरों और पराभव प्रेमियों को ललकारता हुआ एक बार उन्हें भी समर भूमि में उतरने के लिए बुलावा देता है। इसलिए श्री महावीर प्रसाद जी ने साहित्य की शक्ति को तोप, तलवार, तीर और बम के गोलों से भी बढ़कर स्वीकार किया है। बिहारी के एक दोहे से

''नहिं पराग नही मधुर मधु, नहि विकास इहि काल।
अली कली ही सौ बंध्यो, आगे कौन हवाल।''[७]

राजा जयसिंह को अपने कर्तव्य का ज्ञान हो गया और उसके जीवन में बदलाव आ गया। भूषण की वीर भावों से ओतप्रोत ओजस्वी कविता से मराठों को नव शक्ति प्राप्त हुई। इतना ही नही स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान जैसे कवियों ने अपनी ओजपूर्ण कविताओं से न जाने कितने युवा प्राणों मे देशभक्ति की भावना भर दी है। साहित्य ने सदैव राष्ट्र और समाज को नई दिशा देने का कार्य किया है।

तात्पर्य यह है कि समाज के विचारों, भावनाओं और परिस्थितियों का प्रभाव साहित्यकार और उसके साहित्य पर निश्चित रूप से पड़ता है। अत: साहित्य समाज का दर्पण होना स्वाभाविक ही है। साहित्य अपने समाज का प्रतिबिंब है, वह समाज के विकास का मुखर सहोदर है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य एवं संस्कृति का संरक्षण करना समय की आवश्यकता बन गई है, क्योंकि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति से विमुख होने लगी है और उनका रूझान पाश्चात्य सभ्यता की ओर बढ़ रहा है, जोकि चिंता का विषय है। अच्छे साहित्य के सृजन से समाज में सकारात्मक सोंच उत्पन्न होती है, जिससे स्वच्छ समाज के निर्माण की कल्पना की जा सकती है। वर्तमान साहित्य मानव के श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेकर चला है। व्यापक मानवीय एवं राष्ट्रीय हित इसमें निहित है। साहित्यकारों में राष्ट्रीय स्तर पर हितावय एवं भयावह में अंतर करने की क्षमता ही नही, ... स्पष्टता भी जगी है।

साहित्य जनमानस को सकारात्मक सोंच तथा लोक-... के कार्यों के लिए प्रेरणा देने का कार्य करता है। साहित्य ... की कहानी है। मानव सभ्यता के विकास की गाथा है, इसलिए अति आवश्यक है कि साहित्य लेखन निरंतर जारी रहना ... अन्यथा सभ्यता का विकास अवरूध्द हो जाएगा।

आठवें दशक के बाद से आज तक के काल का साहित्य ... वर्तमान साहित्य कहना अधिक उचित होगा, फिर से ... सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर समाज निर्माण की भूमिका को ... के साथ पूरा करने में जुटा है। वर्तमान साहित्य मानव को श्रेष्ठ ... का संकल्प लेकर चला है। हाल के दिनों में संचार साधनों के ... और सोशल मीडिया के माध्यम से साहित्यिक अभिवृत्तियाँ ... के नवनिर्माण में अपना योगदान अधिक सशक्ता से दे रही ... हालाँकि बाजारवादी प्रवृत्तियों के कारण साहित्यिक मूल्यों में ... आयी हे परंतु अभी भी स्थिति नियंत्रण में है।

आज आवश्यकता है कि सभी वर्ग यह समझें की साहित्य समाज के मूल्यों का निर्धारक है और उसके मूल्य तत्वों को ... करना जरुरी है क्योंकि साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने ... विचारों और भाषों की सुंदर अभिव्यक्ति है।

संदर्भ :-

१) आ.रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास - पृ.३
२) डॉ.नगेंद्र - हिंदी साहित्य का इतिहास - पृ.४२५-४२६
३) डॉ.अनिल कटियार - सत्रहवीं तथा अठारहवीं शतियों ... हिंदी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं समाज - पृ.११८
४) वही - वही - पृ.१२०
५) आ.हजारी प्रसाद द्विवेदी - हिंदी साहित्य का इतिहास
६) साहित्य और राष्ट्रबोध - डॉ.. कैलाष त्रिपाठी
७) बिहारी - बिहारी सतसई
८) अज्ञेय - साहित्य, संस्कृति और समाज परिवर्तन की प्रक्रिया ...
९) भाषा के सवाल - डॉ. इंद्रनाथ मदान
१०)चक्रवाक पत्रिका (त्रैमासिकी) अक्टूबर २०१५, मार्च - २० ...

--*